ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 90-93
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

मूक बधिर बच्चों के सामाजिक प्रवंचनाओं का एक समाजशास्त्रीय विवेचन

नैना शुक्ला
रिसर्च स्कॉलर– समाजशास्त्र विभाग, डी0बी0एस0 कालेज, कानपुर, (कानपुर विश्वविद्यालय), कानपुर (उ0प्र0), भारत

Received-25.01.2024, Revised-01.02.2024, Accepted-06.02.2024 E-mail: shishir.bond07@gmail.com

सारांशः ***प्रस्तुत शोध पत्र पर "मूक बधिर बच्चों की समस्या पर आधारित है।" इस शोध पत्र के माध्यम से प्रदेश सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न प्रकार की सरकारी योजनाओं का विश्लेषण एवं मूक बधिर बच्चों के सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक एवं पारिवारिक एवं उनकी मानसिक स्थितियों का पता लगाने व उन्हें एक सहज वातावरण प्रस्थापित करने में सहायक होगा।***

सामान्य तौर पर यह पाया गया है कि जन्म से ही बच्चे मूक बधिर हैं, यदि बच्चा अगर गूंगा है तो उसके पीछे उसका बधिर पन कारण है और इसी बधिरपन के कारण बच्चे बोलने में असहज हैं और इसी कारणवश मूक बधिर बच्चों में कुण्डा व अनेक प्रकार की समस्याओं के कारण बच्चों में विकास नहीं हो पाता है, इन्हीं सब समस्याओं के निवारण हेतु यह शोध पत्र प्रस्तुत है।

इस शोध पत्र के माध्यम से मूक बधिर बच्चों की अनगिनत समस्याओं से अवगत कराने व उनके समाधान खोजने का प्रयास किया गया है, जिससे इन बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ सकें।

कुंजीभूत शब्द– मूक बधिरता, स्पीच थैरेपी, मूक विकलांगता, श्राव्य विकलांगता, पुनर्वासन, सरकारी योजनाओं, सहज वातावरण।

"सपनों का आकाश तो हर किसी का होता है, लेकिन उसकी अभिव्यक्ति के तरीके जरूर बदल जाते है। दिव्यांग बच्चों में प्रकृति ने कुछ कमी छोड़ी है, तो अतिरिक्त रचनात्मकता देकर कहीं न कहीं उन्हें नवाजा भी है।"

"मनुष्य अपने आस–पास के वातावरण के लिए संवेदनशील अपनी पांचों ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से होता है तथा यदि इन्हीं ज्ञानेन्द्रियों में किसी एक में कमी आने पर वह मूक बधिरता की श्रेणी के अन्तर्गत आता है।" मूक बधिरता शारीरिक विकलांगता के अन्तर्गत आती है, जिससे बच्चे की श्रवण शक्ति व बोलने (वाक्) शक्ति में ह्रास हो जाता है, बच्चा या तो जन्म से या किसी दुर्घटनावश या किसी रोग से ग्रस्तता के कारण अपनी बोलने व सुनने की शक्ति खो देता है। मूक बधिर बच्चे बहुत सी चुनौतियों का सामना करते हैं। जिससे उन्हें काफी संकट झेलना पड़ता है।

मूक बधिरता शारीरिक विकलांगता के अन्तर्गत आती है। अतः मूक बधिर व्यक्ति बोलने व सुनने में असमर्थ होता है, जब वही विकलांगता बच्चों में होती है तो और भी असहनीय पीड़ा समाज के लिए होती है, क्योंकि समाज का भविष्य मूक बधिरता के अन्धकार में खोया हुआ हैं इस समस्या का समाधान प्रत्येक नागरिक को जागरूक कर एक सहायक व सामान्य वातावरण तैयार किया जा सकता है, जिससे इन बच्चों में कोई भेदभाव न हो सके वो भी सामान्य बच्चों के साथ अपनी जीवन की खुशियां को चुन सके। मूक बधिर बच्चों के शारीरिक, मानसिक व शैक्षिकता के साथ पारिवारिक दृष्टिकोण अहम रूप निभाता है। मूक बधिर बच्चों में शारीरिक रूप से उन्हें अच्छें स्वास्थ्य केन्द्र की आवश्यकता है तथा शैक्षिक परिदृश्य में आज के सूचना प्रौद्योगिकी के युग में अब डिजिटल शिक्षा की भी आवश्यकता है, जिससे मूक बधिर बच्चे साक्षरता के साथ–साथ डिजिटल साक्षर हों जिससे वे हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा सकें। अतः इसी को ध्यान में रखते हुए अब "मूक बधिर बच्चों के लिए एन0सी0ई0आर0टी0 तैयार करेगी, सांकेतिक भाषा में डिजिटल पाठ्य सामग्री।"[1]

"मूक बधिर विकलांगता के अभिप्रेणा के स्त्रोत के अनगिनत नाम है जैसे सुधा चन्द्रन (क्लासिकल डांसर), देवलिपि का निर्माण करने वाली अंधी और बहरी महिला हेलन केलर इत्यादि।[2]

मूक बधिर की संख्या	
1. कानपुर नगर	116292
2. कानपुर देहात	35804

दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग की ओर से अगस्त 2023 में 24 बच्चों का निःशुल्क ऑपरेशन कराया गया है यह ऑपरेशन महरोत्रा मेमोरियल ईएनटी फाउंडेशन की ओर से कानपुर भेजा गया यह कॉकलर इंप्लांट होता है जिससे बच्चे को मूक बधिरता से मुक्ति मिल जाती है।

3भारतीय साइन लेंग्वेज को (ISL) को NEP2020 की प्रथम वर्षगांठ पर माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने भारतीय साइन लैंग्वेज को एक भाषा विषय यॉनि एक विषय का दर्जा प्रदान किया गया है। इससे इंडियन साइन लैंग्वेज को बहुत बढ़ावा मिलेगा और उन्होंने ये भी कहा कि नई शिक्षा नीति युवाओं को यह विश्वास दिलाती है कि अब देश उनके साथ है।[3]

ADIP योजना सन 1981 से प्रारम्भ हुई है, अत' ADIP (Assistance to Disabled person's for purchase/fitting of Aids/Appliances) के अन्तर्गत विकलांग लोगों की सहायक सामग्री मुहिया करायी जाती है और अब इस योजना को पन्द्रहवें वित आयोग ने 2026 तक बढ़ा दिया है। "इस योजना के अन्तर्गत विकलांगों की सहायता के साथ–साथ उनके विकलांग के प्रभाव को कम करके उनके शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पुनर्वास को बढ़ावा दे सकते हैं।[4]

"एडिप योजना विकलांगों को सहायक उपकरण प्रदान करने से पहले सुधारात्मक सर्जरी (corrective surgery) करने में भी सहायता प्रदान करती है।"[5]

एन0सी0ई0आर0टी0 के 60वें स्थापना दिवस के मौके पर शिक्षामंत्री एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री की मौजूदगी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

में यह फैसला लिया गया है कि अब मूक बधिर बच्चे बगैर शिक्षकों के भी इसे देखकर पढ़ सकेंगे। सबका साथ और सबका विकास के साथ अब एक स्टैण्डर्ड डिजिटल पाठ्यक्रम ला रही है तथा इसे एन0सी0ई0आर0टी0 व इंडियन साइन लैंग्वेज रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर के बीच एक करार हुआ है इसमें कक्षा एक से बारहवीं तक के सभी किताबों को अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में होगीं नई शिक्षा नीति के तहत जब इन मूक बधिर बच्चों को भी स्कूलों से जोड़ने पर जोर दिया गया है तथा इस काम को शुरू भी कर दिया गया है।

मूक बधिर बच्चों से वार्तालाप साइन लैंग्वेज के द्वारा की जाती है, जिससे वे दूसरों की समझ पाते हैं तथा अपने मन की बात के द्वारा व ओष्ठ पठन सांकेतिक भाषा, स्पर्श विधि द्वारा प्रकट कर पाते हैं।

सरकारी योजनाएं "मूक बधिर और अन्य विकलांगों के लिए कई राज्य ओर केन्द्र सरकार की योजनाएं है, एवं सहायता उपकरणों की खरीद फिटिंग के लिए दिव्यांग व्यक्तियों की सहायता योजना जिसे (ADIP Scheme) के नाम से जाना जाता है एवं बाल श्रवण योजना, विकलांग पेंशन योजना, विकलांग लोन योजना, काकिलयर इम्प्लांट इत्यादि दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं हैं।

"2009 में (बाल श्रवण योजना) बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें निःशुल्क धनराशि व ऑपरेशन कराया जाता है तथा ये माननीय योगी जी द्वारा संचालित है।"

"23 सितम्बर को "साइन लैंग्वेज डे" के रूप में मनाते हैं, जिससे हम समाज में ऐसे बच्चों के प्रति जागरूकता ला सकें।

"यूनाइटेड नेशन ने 1992 में 3 दिसम्बर को विश्व विकलांगता दिवस घोषित किया है।"

2011 की जनगणना के अनुसार 19प्रतिशत श्रवण बाधित व 7 प्रतिशत वाक् व भाषा बाधित हैं।

6क्रो एण्ड क्रो के अनुसार "एक व्यक्ति जिसको कोई ऐसा शारीरिक दोष होता है, जो किसी भी प्रकार से उसे सामान्य क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है अथवा उसे सीमित रखता है। उसे हम शारीरिक न्यूनतरता या विकलांग व्यक्ति कह सकते हैं।[6]

माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने "मन की बात" कार्यक्रम में विकलांगता को "दिव्यांगता" कह कर सम्बोधित किया है क्योंकि उनके पास एक अतिरिक्त शक्ति होती है।" "विकलांगता शारीरिक रूप से लोगों से उतना नहीं छीनती जितना सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से वह उन्हें प्रभावित करती है।

विकलांग व्यक्ति अक्सर अपने मानवाधिकारां का पूरा–पूरा उपयोग करने से वंचित रह जाता है। मूक बधिर विद्यालयों में शैक्षिक सुविधाओं के साथ–साथ उनके कौशल विकास के जरिए मूक बधिर बच्चों के सर्वांगीण विकास किया जाता है। मूक बधिर बच्चों के पारिवारिक वातावरण का केन्द्र बिन्दु परिवार के सदस्यों द्वारा उनके प्रति किए व्यवहार प्रमुख है, जिससे उनकी मानसिकता पर प्रभाव पड़ता है। मूक बधिर बच्चों को स्नेह के साथ –साथ उत्साहवर्धक मनोवृत्तियों के साथ उन्हें आगे बढ़ने का हौसला देना चाहिए। सरकार निरंतर प्रयासों के जरिए ऐसे बच्चों के पुनर्त्थान में लगी है जिनमें प्रमुख है मूक बधिरों की आर्थिक, सामाजिक पार्श्वचिन्तन जो इन बच्चों को सुविधाएं मुहैया कराए।

पूर्व में किए गए शोध (साहित्य समीक्षा)–

1. सिंह, अंजू (शोध गंगा).2015 इनका शोध उत्तर प्रदेश के सभी मूक बधिर विद्यालयों का है, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ऐसे बच्चों को (विशेष थैरेपी) व विशेष अध्यापकों की भी आवश्यकता है। इनके प्राप्त निष्कर्षों में मूक बधिर विद्यालयों की शैक्षिक समस्याओं को कम करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक आवश्यकताओं दोनों को ही ध्यान में रखना आवश्यक है।
2. वर्मा, पल्लवी (रिसर्च गेट) इनका अध्ययन "स्मार्ट दस्ताने का डिजाइन" पर आधारित है जो (मूक बधिर) लोगों को अपनी बात कहने व सुनने में सहायता मिलेगीं इस प्रभावी योजना का उद्देश्य आवाजहीन व्यक्ति को आवाज दे सके तथा बधिर व्यक्ति द्वारा "स्मार्ट दस्ताने" का उपयोग करने में व अपनी बात रखने में समझ रहेंगें।
3. Hajela Rakhi Patrika.com (21 Jan-2021) इनका अध्ययन राजधानी जयपुर के राजकीय महाविद्यालय का है, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि इन विद्यालयों में विशेष शिक्षकों का कोई विशेष सुविधा नहीं है। अतः इनके अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार कि "अगर कालेज में भविष्य तथा विशेष शिक्षकों की नियुक्ति हो जाए तो मूक बधिर बच्चों की समस्या का अन्त हो जाएगा। ऐसे में मूक बधिर बच्चे अपनी बात शिक्षक तक तथा शिक्षक भी अपनी पढ़ाई उन तक पहुंचा सकेंगे।
4. Shukla Vivek (अमर उजाला ब्यूरो, गोरखपुर Updated Mon 29 Nov-2021) विवेक शुक्ला अवगत कराया है, कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने राज्य सरकार को दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग व केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय की सहायता से नया जीवन मिला है तथा यह सहायता (कौक्लियम इम्प्लांट) के जरिए दी गई हैं, जिससे मूक बधिर बच्चें सामान्य जीवन जी सकेंगे। इस कौक्लियर इम्प्लांट के जरिए बधिर व मूक बच्चे सुन सकेंगें व भविष्य में आगे बढ़ेगें।
5. Kumar, Vasant- इनका शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा परिषद विद्यालयों का है। विद्यार्थियों की बुद्धि एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है तथा इन्होंने अपने शोध अध्ययन में यह पाया कि सामान्य विद्यार्थी की मूक बधिर विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक प्रकोष्ठ पाए गए हैं तथा मूक बधिर विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के लिए समय–समय पर अभिभावकों व कुशल चिकित्सकों व विचार गोष्टी करानी चाहिए।

समस्या का औचित्य– किसी भी अध्ययन का औचित्य उसके विस्तृत परिगामों पर आधारित होता है कि वह समाज में कितना आवश्यक है, इसी को ध्यान में रखते हुए वर्तमान परिदृश्य में "मूक बधिर बच्चों के सृजनात्मक विकास के लिए एक सटीक विषय है।" मूक बधिर बच्चे हमारे समाज का एक अंग है, अतः हमें एक पक्ष के महत्वपूर्ण साथ–साथ दूसरा पक्ष उनके जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं को देखते हुए चयनित समस्या का औचित्य प्रस्तुत है।

समस्या कथन– "मूक बधिर बच्चों की सामाजिक प्रवंचनाओं का एक समाजशास्त्रीय विवेचन"

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

शोध के उद्देश्य–

1. मूक बधिर बच्चों के प्रति उनके परिवारों व उनके शिक्षकों के व्यवहारों की जानकारी प्राप्त करना।
2. मूक बधिर विद्यालयों में ऐसे बच्चों की शैक्षिक कौशल विकास के गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करना।
3. सरकार द्वारा चलायी जा रही समस्त "मूक बधिर" योजनाओं के कार्यक्रमों का मूल्यांकन करनां
4. मूक बधिर बच्चों क पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक एवं व्यक्तिगत सूचना की जानकारी प्राप्त करना।
5. मूक बधिर बच्चों के स्वास्थ्य सम्बन्धी एवं जीवन कौशल से जुड़ी समस्त पहलुओं की जानकारी प्राप्त करना।

शोध की परिकल्पना–

1. मूक व बधिरता से पीड़ित बच्चें भविष्य में आने वाली समस्याओं का सामना करने में सक्षम नहीं हैं।
2. सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों का लाभ ऐसे बच्चों तक पहुंच रहा है।
3. मूक बधिर बच्चों में अवसाद, डर व कुण्ठा की भावना रहती है।
4. मूक बधिर बच्चों के लिए उचित चिकित्सीय परामर्श की सुविधा उपलब्ध रहती है।
5. सूचना तकनीकी संयन्त्रों के माध्यम से इनके जीवन को एक नयी सोच मिलती है।

शोध पद्धति– प्रस्तुत शोध पत्र कानपुर परिक्षेत्र में संचालित निजी शिक्षण संस्थाओं पर आधारित है, कानपुर परिक्षेत्र के दायरे में बहुत सी सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं व थैरेपी सेन्टर मूक बधिर बच्चों के विकास का कार्य कर रही है तथा इन संस्थाओं में लगभग (800) बच्चें अध्ययनरत है तथा इस शोध पत्र के लिए एक परिक्षेत्र का चयन किया गया है, जिनमें (250) बच्चें अध्ययनरत हैं, शोध पत्र की सुगमता को ध्यान में रखते हुए विवरणात्मक पद्धति के अन्तर्गत उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से (100) उत्तरदाताओं का चयन किया गया है तथा यह उत्तरदाता स्वयं मूक बधिरता से पीड़ित बच्चें न होकर उनके अभिभावक है। जिनसे उचित जानकारी प्राप्त हुई है।

ऑकड़ा संकलन– इस शोध पत्र में प्राथमिक स्त्रोतों के साथ द्वतियक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। जैसे – स्वनिर्मित प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन विभिन्न प्रकार की सरकारी वेबसाइड, सरकारी रिपोर्ट, जनगणना रिपोर्ट, पुस्तकें, पत्रिकाएं इत्यादि।

शोध की परिसीमाएँ–

1. प्रस्तुत शोध कानपुर नगर।
2. प्रस्तुत शोध कार्य कानपुर नगर के मूक बधिर विद्यालयों तक सीमित है।

शोध पत्र के निष्कर्ष–

- मूक बधिर विद्यालयों में श्रावण यंत्रों की कमी है, जिससे मूक बधिर बच्चों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों में छात्रों की संख्या अधिक है अपेक्षा लड़कियों के।
- मूक बधिर विद्यालयों में शिक्षा की विशेष सुविधाओं के साथ–साथ कम्प्यूटर इत्यादि जैसे कौशल विकास कार्यक्रमों का भी संचालन किया जाता है।
- भारत सरकार ने जो अनगिनत प्रयास कर रही है मूक बधिर बच्चों के उत्थान के लिए अभी भी मूक बधिर बच्चों को उस सहायता की सुविधा प्राप्त नहीं हो पा रही है। विशेष तौर पर निजी संस्थानों में जो मूक बधिर विद्यालयों का संचालन कर रहे हैं।
- बहुत से अभिभावकों ने सरकारी मदद ली है और बहुत से अभिभावक जागरूक नहीं हैं। सरकारी योजनाओं के प्रति।
- मूक बधिर बच्चों में अनगिनत हुनर देखने को मिले हैं जैसे– कला, रंगोली विभिन्न तरह की चित्रकारी इत्यादि।
- कानपुर परिक्षेत्र में संचालित मूक बधिर विद्यालयों में कुछ विद्यालय निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करा रहे हैं जिनमें सिर्फ अभिभावकों से बस का किराया लिया जाता है और कुछ मूक बधिर विद्यालयों में निम्न राशि की फीस ली जाती है।
- मूक बधिर बच्चों के अभिभावक अपने बच्चों के प्रति बहुत ही जागरूक पाये गए हैं, वे अपनों व बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ अन्य प्रकार के कौशल विकास कार्यक्रमों में भी भागीदारी कराते हैं।

मूक बधिर विद्यार्थियों के अभिभावक अधिकतर निम्न स्थिति के पाए गए हैं और कुछ अच्छी स्थिति में हैं। सरकार द्वारा दी जाने वाली योजनाएं व पुनर्वासन सम्बन्धी सुविधाएं आज में कानपुर क्षेत्र में संचालित निजी संस्थानों द्वारा संचालित मूक बधिर विद्यालयों में आज भी नहीं पहुंच पा रही है। ये निजी संस्थानों में विद्यालयों की मद भिन्न–भिन्न तरह के एन0जी0ओ0 के द्वारा की जाती है। बहुत से मूक बधिर छात्र छात्राएं शिक्षा के साथ–साथ स्वयं भविष्य में आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं। मूक बधिर बच्चें मानसिक तौर पर स्वस्थ्य हैं और साधारण बच्चों की तरह जीवन यापन करते हैं।

मूक बधिर बच्चे भविष्य में आने वाली समस्याओं का सामना करने में सक्षम होंगे। सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं को अभी और भी बड़े स्तर पर लागू होने की जरूरत है। कुछ भाग अभी भी वंचित है। मूक बधिर बच्चों में अवसाद व कुण्डा की भावना में कमी हुई है। मूक बधिर बच्चों में बेहतर चिकित्सीय परामर्श की सुविधा लागू है एवं निःशुल्क ऑपरेशन भी करया जाता है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से एक नयी दिशा की ओर अग्रसर हुए हैं। "आज के प्रगतिशील समाज में हम सूचना प्रौद्योगिकी के जरिए जागरूकता ला सकते हैं जिससे हम बहुत कुछ नये तरीकों से जैसे साइन लैंग्वेज व नये इलैक्ट्रॉनिक गैजेट इत्यादि से मदद करके उनके जीवन में सुधार ला सकते हैं।

अतः हम सबको मिलकर इन बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए कार्य करना होगा तथा हम बच्चों के सामाजिक, आर्थिक उनके समावेशी विकास कर उन्हें आगे एक नयी रोशनी की धारा तथा एक नयी सोच व एक नई जागरूकता लाकर एक नया दृष्टिकोण दे

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

सकते हैं।

प्रदेश सरकार के निरंतर प्रयास के परिणास्वरूप मूक बधिर बच्चों के जीवन में एक नया आयाम दिया है, जिससे मूक बधिर बच्चें परिपक्वता की श्रेणी में आकर समाज की नई धारा से जोड़ेगे। सरकार की विभिन्न प्रकार की योजनाओं से जागरूकता आयी है तथा इसे हर क्षेत्र में लागू करने के साथ–साथ समय–समय निःशुल्क चिकित्सीय परामर्श, मानसिकता की जांच व कार्यशालाओं की उपलब्धता इन मूक बधिर बच्चों के जीवन में एक नयी सुबह का कार्य करेगी एवं आज के प्रगतिशील समाज में हम सूचना प्रौद्योगिकी के जरिए जागरूकता ला सकते हैं। जिससे हम बहुत कुछनये तरीकों से जैसे – साइन लैंग्वेज व नये इलैक्ट्रॉनिक गैजेट इत्यादि से मदद करके उनके जीवन में सुधार ला सकते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Singh, Anju "Utter Pradesh ke Raajakeey Mook Badhir Vidyayalayan mein Adhyayanrat Vidyaarthyon ka Samaajashaastreey Adhyan.
2. Sharma, Annapurna "Mook Badhir Vidyarthion ke Samayojan Samasyaon ka adhyan Rajasthan ke sandarbh mein.
3. Bhaskar.com/Local/Uttar Pradesh/Firohabad/news/education of deaf-children
4. https://www.bhaskar.com>news>CHH-DURG-MAL-Late
5. International Day of sign Language 2022 Daily current news Drasti IAS Youtube Channel.
6. WHO.int/teams/noncommunicable-diseases/sensory-functions disability.
7. Wikipedia- Deaf and Dumb.
8. Deaf and Dumb School-Goonge Bahre ka Vidyalaya. Saket Nagar Kanpur
9. Goonge Bahre ka Vidyalaya. P. Road, Kanpur.
10. Mishra Deaf & Dumb Care Center Khapra Mohal, Rail Bazar, Kanpur.
11. Census of India 2011
12. www.Rehabcouncil.nic.in/vindi/edhiniyam.htm
13. कुरुक्षेत्र पत्रिका, ''विकलांगों के बारे में मानसिकता बदलनी'' पृ0सं0 29–32
14. Design of communication interpreter for Deaf and Dumb person (1) Verma Pallvi, (II) S.L. Shini (Research Gate)
15. Shukla Vivek (अमर उजाला ब्यूरो गोरखपुर updated mon 29 Nov-2021)
16. Hajela Rakhi (Patrika.com21Jan-2021)
17. Kumar Vasant (Shodh Ganga) High School Star ke samaya fv mook badhir vidhyaaarthi ki Budhi ev Srijinatmak ka tulnatmak adhyan (1 Mar-2019)
18. Chand Dinesh (shodh Ganga) ''सामान्य मूक बधिर और दृष्टिहीन छात्रों की आदतों सांस्कृतिक क्रियाकलापों एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'' (2 Nov-2017)
19. https://earguru.in> नौकरियां / दिव्यांगों के लिए योजनाएं
20. https://www.SAmanyagyan.com
21. https://www.etvbharat.com state
22. https://hi.m.wikipedia.org>wiki
23. Friedman, RJ and J.C. Exceptional children, 1971
24. amarujala.com/uttar-pradesh/shamli/deaf and mute- children-sent-to-kanpur-for operation-shamli-News.
25. NEP2020 first anniversary livehindustan.com
26. Disability affairs.gov.in
27. earguru.in दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं
28. hi.Vikaspedia.in

*****